# विवाह....

## सभी के आदर योग्य!

Indian Churches of Christ

## अध्याय-१
# अनुक्रमणिका


| अध्याय क्र. | शीर्षक | प.क्र. |
|---|---|---|
| ०१. | अहाब और ईजबेल - भाग १ | ५ |
| ०२. | ऊरियाह और बेतशेबा - भाग २ | ६ |
| ०३ | आदम और हव्वा - भाग १ | ७ |
| ०४ | कैन और हाबिल - भाग २ | १० |
| ०५ | याकूब और राहेल | १२ |
| ०६ | नाबाल और अबिगैल - भाग १ | १८ |
| ०७ | नोहा और उसका परीवार - भाग २ | २० |
| ०८ | एली और उसके पुत्र - भाग ३ | २२ |
| ०९ | इसहाक और रिबका | २४ |
| १० | अब्राहम और सारा | ३० |

## अध्याय-१

# अहाब और ईजेबेल - भाग १

## परिचय:

अहाब इस्राएल का राजा था जिसने इस्राएल पर २२ वर्षों तक राज्य किया। सिदोन के राजा की बेटी ईजेबेल के साथ उसका विवाह हुआ था। उन दोनों को परमेश्वर के लोगों का ध्यान रखना था (१राजा २०)।

## जीवन का लेखा:

१. विवाह के बाद अहाब की पत्नी ने उसे भटका दिया और वह बाल देवता की उपासना करने लगा, जिससे परमेश्वर घृणा करते थे।

२. ईजेबेल ने पूरी तरह से अहाब को अपने काबू में रखा था और अहाब ने भी उसे कुछ भी करने से कभी नहीं रोका।

३. अहाब के जीवन में परमेश्वर का भय नाम मात्र भी न था, उसका मन घमण्ड और स्वार्थ से भरा था, और उसके पास जो भी था उससे वह संतुष्ट नहीं था।

४. अहाब और ईजेबेल दोनों ने ही समझौता किया और अनेक पापों में डूब गए, और परमेश्वर की नज़र में अहाब सबसे दुष्ट राजा ठहरा।

५. अपने लालच और धृणा के कारण उन्होंने नाबोत पर झूठा आरोप लगाया और उसे पत्थर से मारकर जान से मार देने की सज़ा सुनाई।

६. नबी एलिय्याह के भविष्यवाणि के अनुसार उन दोनों की बहूत ही दर्दनाक मौत हुई और उनके सभी बेटों और संम्बन्धीयों को निर्दयता से मार डाला गया।

## सीख(सबक):

- एक परिवार के नाते सावधानी से **सिर्फ परमेश्वर की ही सेवा करें।**(कभी - कभी, हमारे काम, लोग, सांसारिक बातें आदि हमारे लिये बाल देवता बन सकते हैं)
- **लालच** से सावधानी बरतो ( जो हमारे पास नहीं है उस पर अपना ध्यान न लगाओ)।
- **दुष्ट विचारों** से सावधान रहो। आपस में कभी भी **पाप को बढ़ावा** मत दो।

## अध्याय - २

# ऊरियाह और बेतशेबा - भाग २

## परिचय:

ऊरियाह, दाऊद की सेना का एक वफादार और विश्वास योग्य सैनिक था। उसका विवाह बेतशेबा नामक एक बहूत ही सुन्दर स्त्री के साथ हुआ। वे यरुशलेम में राजा के महल के पास रहते थे (२शमूएल ११:१-२८)।

## जीवन का लेखा:

१. परमेश्वर की सेना में लड़ने के लिये ऊरियाह के पास दृढ़ संकल्प था और अपनी पत्नी से दूर रहने के लिये भी तैयार था। उसे वाचा के संदूक और अपने साथी सैनिकों की इतनी चिंता थी कि उसने अपनी पत्नी के साथ कुछ समय बिताने के राजा दाऊद के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। युद्ध के समय में उसने अपने निजी बातों की ओर कभी ध्यान न दिया। उसे सिर्फ इसी बात की चाह थी कि वह जाकर परमेश्वर के लिये विजय प्राप्त करे।

२. दूसरी ओर बेतशेबा बाहरी रुप से सुन्दर और आकर्षक थी लेकिन भीतर से वह बदसूरत और अधार्मिक थी। पवित्रता के बारे में उसका संकल्प बहूत कम था और खुद को खुला करने में उसे कोई हिचक न थी। उसने राजा की ईच्छा से इंकार नहीं किया। उसे अपने किये व्यभीचार का कोई पछतावा नहीं था और उसे इस बात की भी शर्म न थी कि वह अपने गर्भवती होने का समाचार किसी ओर के हाथों राजा तक पहूंचाए।

३. बेतशेबा का समझौता भरा जीवन और व्यभीचार के प्रती उसका सरल(चलता है) स्वभाव उसके महान पती की हत्या का कारण बना।

## सीख(सबक):

- किसी भी अपवित्रता से कभी भी **समझौता** न करें।
- हम क्या पढ़ रहे हैं, क्या देख रहे हैं और क्या सोच रहे हैं इस बात का ध्यान रखें और **सतर्क** रहें।
- अपने विवाह में **पवित्रता का एक स्तर** रखें (इफीसियों ५:२)।

## अध्याय - ३

# आदम और हव्वा - भाग १

## परिचय:

वे इस संसार के पहले पती-पत्नी थे। उनका विवाह परमेश्वर ने नियुक्त किया था। आदम को हव्वा पत्नी के रुप में मिले यह परमेश्वर की ईच्छा थी। आदम को जो बाग सौंपा गया था उसमें काम करना और उसकी देखभाल करना यह उसके लिये एक पारिवारिक ज़िम्मेदारी जैसा था। वह परमेश्वर के बहूत समीप था। हव्वा को आदम का सहायक बनकर रहना था, जिसका काम आदम से कुछ कम स्तर का था और वह धार्मिकता में उसकी साथी थी, और दोनों को परमेश्वर के प्रती विश्वास योग्य रहने और उनके आज्ञाओं को मानने में एक दूसरे की मदद करनी थी। उनके बेटे और बेटियां थीं (कितने इसका उल्लेख पवित्र शास्त्र में नहीं है)। उनके बच्चों में कैन, हाबिल और सेत मुख्य थे।

## पढ़ने के वचन:

अपनी पत्नी के बारे में आदम के विचार और कैसे वो एक स्वतंत्र परीवार बने, इसका कारण जानने के लिये पढ़ें - उत्पत्ती २:२३-२४।

परमेश्वर और एक दूसरे के साथ उनके रिश्तों में कैसे तनाव आया;

अ.परमेश्वर द्वारा आदम को निर्देश - उत्पत्ती १:२८-२९, उत्पत्ती २:१५-१७

ब. पहले पती पत्नी का पतन - उत्पत्ती ३

## आदम और हव्वा से क्या गलती हुई; (गौर करने वाली बातें?)

**आदम;**

१. परमेश्वर के वचनों के प्रती आदम की समझ एक कारण हो सकता है। यदि वह परमेश्वर के वचनों की गहराई को समझने और उनके प्रती वचनबद्ध रहने की बात को गंभीरता से लेता, तो वह हव्वा को भटकने न देता (इब्रानियों २:१)।

२. हव्वा के दबाव की शक्ति के आगे झुक जाना। परमेश्वर ने पुरुषों को पत्नी का सिर होने के लिये निर्धारित किया है (इफिसियों ५:२३)।

३. वह हव्वा के दोस्तों से अंजान था। यहाँ वह एक किसी ऐसे धूर्त से मित्रता बढ़ा रही थी और आदम इससे अंजान था (१कुरुन्थियों १५:३३)।

४. जब हव्वा पाप में गिरी, तब आदम उसे पश्चाताप के मार्ग पर नहीं ले गया (हव्वा ने जो किया उसके बारे में उसने हव्वा से पूछताछ नहीं किया) बरन् खुद भी उसके साथ मिलकर पाप का आनंद लूटा।

५. उसने परमेश्वर से सच्चाई छुपाई। उसके पास अब भी समय था कि वह परमेश्वर के साम्हने पाप कबूल करे और पश्चाताप करे। परमेश्वर इस बात से नाराज़ नहीं थे कि उसने **क्या** किया लेकिन उसने जो **धोखा** दिया उससे नाराज थे, और इसी कारण परमेश्वर ने उन दोनों को अपने बाग से निकाल बाहर किया।

६. जब समझाया गया, तब अपनी गलती, जिससे वह पाप में गिरा, मानने के बजाए वह दूसरों पर दोष लगाने लगा।

**हव्वा:**

१. एक स्त्री जो लालच से हार गई।

२. सांसारिक रिश्ते।

३. वह परमेश्वर के निर्देशों को समझ न सकी।

४. अपने पती के आधिन रहकर उसे अगुवाई करने देने और निर्णय लेने देने के बजाए वह खुद अगुवाई करने लगी।

## व्यक्तिगत लेखा:

आदम और हव्वा से आपने जो भी सीखा, उस पर आधारित होकर आपके जीवन में जो भी कमज़ोरियां आप देखते हैं लिखें।

**पती:** _____

_____

_____

_____

_____

**पत्नी:**

## योजना:

अब जब आप अपनी कमज़ोरियों को जान गए हैं तो, कृपा करके अपने सहायक गुट अगुवे के साथ फलदायक समय बिताएं और उनसे पूछें कि वैवाहिक रिश्ते में और परमेश्वर के साथ आपके रिश्ते में बदलाव लाने के लिये आपको ज़िम्मेदार कैसे ठहराएं।

## केंद्रित प्रार्थना:

• जिस किसी क्षेत्र/बातों में आपने उनका विरोध किया और यदि इस बात को मानते हैं तो, उन बातों के लिये परमेश्वर से क्षमा और पूर्ण रुप से पश्चाताप करने में मदद की मांग करें।

## अध्याय - ४

# कैन और हाबिल - भाग २

### संसार के पहले भाईयों का परिचय:

आदम और हव्वा के बेटे - कैन और हाबिल के बारे में हम सभी जानते हैं। इस कहानी में हम जो देखना भूल जाते हैं, वो है माता - पिता के अलग - अलग जीवनशैली का बच्चों के जीवन पर प्रभाव। इस कहानी को गहराई से जानने का मकसद यह है कि हम हमारे अन्दर छुपी उन बातों को जानें जिसे एक माता - पिता के रुप में हम अनदेखा करते हैं।

### पढ़ने के वचन:

बच्चों में स्पर्धा : उत्पत्ती ४:१०, १यूहन्ना ३:१२

### बच्चों के देखभाल के कुछ छुपे हुए सिद्धान्त:

१. बच्चों में कभी भी किसी एक का पक्ष ना लो।

२. बच्चों के आपस के रिश्ते को मजबूत बनाने के लिये आराधना (डीवोशन) समय रखो।

३. उन्हें परमेश्वर का भय मानना और परमेश्वर को बचा कुचा नहीं बरन् सर्वोत्तम देना सिखाओ। कलीसिया की सभा और डीवोशन में बच्चे ज़रुर आएं इसका ध्यान रखें।

४. बच्चों को दृढ़ता से और परमेश्वर के वचनों से सिखाएं। उनके हृदय की बातों को जानों और उससे निपटो। बच्चों के नखरे (नाटक) मत सहो।

### व्यक्तिगत लेखा:

इस अध्ययन के बाद आपको क्या लगता है कि बच्चों की किन बातों को आप अनदेखा कर रहे थे। नीचे लिखें:

**पिता के नाते:**

**पत्नी के नाते:**

## योजना:

अब जब आप अपनी कमज़ोरियों को जान गए हैं तो, कृपा करके अपने सहायक गुट अगुवे के साथ फलदायक समय बिताएं और उनसे पूछें कि आपके बच्चे में बदलाव लाने के लिये आपको ज़िम्मेदार कैसे ठहराएं। यदि आपके बच्चे १० वर्ष के या इससे बड़े हैं, तो उनके लिये एक मार्गदर्शक चुनें जो उनकी मदद कर सके।

## अध्याय - ५

# याकूब और राहेल

**पढ़ने के वचन:**

उत्पत्ती २८:१-३२

**परिचय:**

याकूब अपने भाई एसाव से बचकर भाग रहा था, जिसने उसे अपना पहिलौठे का अधिकार (ओहदा) और आशीष (धन) चोरी करने के कारण जान से मारने की धमकी दी थी। बेथेल में याकूब को परमेश्वर ने वचन दिया। "और सुन, मैं तेरे साथ रहूंगा, और जहां कहीं तू जाए वहां तेरी रक्षा करूंगा, और तुझे इस देश में लौटा ले आऊंगा। मैं अपने कहे हुए को जब तक पूरा न कर लूं तब तक तुझ को न छोडूंगा।" (उत्पत्ती २८:१५)।

१. याकूब एक धोखेबाज़ सौदागर था।

२. राहेल स्वार्थी और बिगड़ैल स्वभाव की एक खूबसूरत लड़की थी।

## वो मिले और उनका विवाह हुआ

१. बाहरी सुन्दरता - याकूब ने राहेल में सबसे पहले कौनसी बात देखी? "रुपवती और सुन्दर" (२९:१७)।

२. पहली नज़र में प्यार - राहेल के प्रती याकूब की प्रतिक्रिया क्या थी? "कुएं के मुंह से पत्थर को लुढ़काकर भेड़-बकरियों को पानी पिलाया"(२९:१०)। "तब याकूब ने राहेल को चूमा और ऊंचे स्वर से रोया"(२८:११)। एक दिखावा।

३. लम्बे समय तक नहीं - कितने समय पहले याकूब ने यह तय किया कि वह राहेल से विवाह करेगा? "याकूब एक महीना भर लाबान के साथ रहा"(२९:१४)। "मैं तेरी छोटी बेटी राहेल के लिये सात बरस तेरी सेवा करूंगा"(२९:१८)।

## शादी का प्रस्ताव कब?

- जब उसे अच्छी तरह जान लें, ताकि जीवन भर साथ निभाने का संकल्प ले सकें
- जब तक यह न जान लें, कि यह शारीरिक भूख नहीं सच्चा प्यार है -
- जब तक परमेश्वर की इच्छा न जान लें

- हमारे मन में बसे उनके रुप की छवी से नहीं, पर जब तक उस व्यक्ति को सही रुप से न जान लें

४ हां, लेकिन इसमें समय लगता है - एक विवाह जो शारीरिक आकर्षण से आरंभ हुआ, क्या वह अटूट प्रेम में बड़ सकता है? संकेत: यह सच्चा प्रेम है या नहीं, यह आपको तब तक पता नहीं चलता जब तक आप विवाह में हुए पहले झगड़े को सह न लो!

५ जुदाई प्रेम को बढ़ा देती है - सात साल की सेवा में क्या याकूब के मन में राहेल की चाहत कम हुई? "याकूब ने राहेल के लिये सात बरस सेवा की; वे सात वर्ष उसको राहेल की प्रीति के कारण थोड़े ही दिनों के बराबर जान पड़े"(२९:२०)। संकेत: यह सच्चा प्रेम है या नहीं, यह आपको तब तक पता नहीं चलता जब तक आप कुछ समय की जुदाई को सह न लो!

## जल्दबाज़ी में विवाह, आजीवन का पश्चाताप

- जल्दबाज़ी में एक दिवानापन होता है, क्योंकि यहां सिर्फ खुद के बारे में ही सोचते हैं

- दिवानापन यह कहता है कि मुझे विवाह कर लेना चाहिये क्योंकि तुम्हारा साथ मुझे अच्छा लगता है

- प्रेम कहता है कि तुम्हारे लिये अच्छा है, यह निश्चित करने के लिये मैं इंतज़ार कर सकता हूं

६. चाल चलने वाले से चालबाज़ी - धूर्त्त लाबान ने विवाह की रात राहेल की जगह लिआ को विवाह में बैठा दिया। आप उस विवाह को चोट पहूंचाते हो जब शारीरिक संम्बन्ध के लिये, पेट में पल रहे बच्चे के लिये, पैसे के लिये, मस्ती के लिये, या "खोखले वादों" के लिये आप किसी व्यक्ति के साथ "चाल" चलते हो।

७. लिआ को एक सुहाग रात दो - लाबान ने इस बात को कैसे समझाया? "इसका सप्ताह (मधुचन्द्र-हनिमून) तो पूरा कर फिर दूसरी (राहेल) भी तुझे उस सेवा के लिये मिलेगी जो तू मेरे साथ रहकर और सात वर्ष तक करेगा" (२९:२७)।

## दो रास्ते

- याकूब लिआ का इंनकार कर देता (और राहेल को खो देता)
- याकूब लिआ को परमेश्वर की मर्ज़ी समझकर स्वीकार कर लेता

८. एक जीवनकाल में एक स्त्री के लिये एक पुरुष - क्या परमेश्वर की ईच्छा में एक ही समय में दो पती या दो पत्नी की बात शामिल है? नहीं!

अ. परमेश्वर लोगों का इस्तेमाल वहीं करता है जहां वो उन्हें पाता है

ब. कभी कभार पवित्र शास्त्र बयान करता है नुस्खा नहीं बताता

१. उसकी जलन सामने आई - जब लिआ के बच्चे हुए, तब राहेल ने याकूब से शिकायत की, "मुझे भी सन्तान दो, नहीं तो मर जाऊंगी" (३०:१)।

२. राहेल की जलन में गलत क्या है?
अ. लिआ नहीं परन्तु राहेल खूबसूरत थी

ब. पती का प्यार लिआ को नहीं राहेल को मिला था

क. राहेल के पास सबकुछ था सिवाय सन्तान के, इसलिये वह ईर्ष्यालु, जलन करने वाली, स्वार्थी, मांग करने वाली और असंतुष्ट बन गई।

ड. राहेल की जलन ने उसके पती का गुस्सा भड़काया। तब याकूब ने राहेल से क्रोधित होकर कहा, "क्या मैं परमेश्वर हूं?"(३०:२)।

३. असंन्तुष्ट पत्नी के पाप - बच्चों की चाह, गर्भ धारण से इन्कार, घर चलाने वाली, नौकरी की चाह, नौकरीपेशा माँ घर पर रहना चाहती है, घर पसन्द नहीं, नौकरी पसन्द नहीं, पती जो कमाकर लाता है वो पसन्द नहीं, पती की आदतें पसन्द नहीं, यहाँ तक कि पती भी पसन्द नहीं।

४. असंन्तुष्ट पती के पाप - घर के रख रखाव से असंन्तुष्ट,पत्नी जो कपड़े पहनती है उससे असंन्तुष्ट, बच्चों के साथ उसके बर्ताव से असंन्तुष्ट, मोटापा बड़ जाने से असंन्तुष्ट, समय की बर्बादी से असंन्तुष्ट, पैसे खर्च करने से असंन्तुष्ट या बच्चों को सुधारने के तरीके से असंन्तुष्ट।

५. असंन्तुष्टता से आप कैसे निपट सकते हैं?

अ. बात करो

ब. अपेक्षाओं को बदलो

क. कारणों को पहचानो

ड. पती - पत्नी के अच्छे गुणों को देखो

इ. अपनी असंन्तुष्टता को "क्रूस पर लटकाने की" योजना बनाओ - "सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है"(१तिमुथियुस ६:६)।

प. अपनी ईच्छाओं को नया रुप दो, "मैंने यह सीख लिया है कि जिस दशा में मैं रहूं, उसी में संतोष करुं"(फिलिप्पियों ४:११)।

६. अपनी दादी सारा की तरह योजना बनाई - राहेल अपने बांजपन से कैसे निपटी? "राहेल ने कहा, अच्छा, मेरी दासी बिल्हा हाज़िर है। उसी के पास जा, वह मेरे घुटनों पर जनेगी" (उत्पत्ती ३०:३)।

७. याकूब के स्नेह के लिये स्पर्धा - राहेल अपनी बहन के बारे में कैसे बताती है? "मैंने अपनी बहिन के साथ बड़े बल से लिपटकर मल्लयुद्ध किया और अब जीत गई"(उत्पत्ती ३०:८)।

८. सलाद के लिये शरीर संम्बन्ध का सौदा किया - राहेल को हमेशा वही चाहिये होता था जो उसका नहीं था। रुबैन को कुछ विशेष सब्ज़ी मिली जो वह अपनी माँ लिआ के पास ले आया। राहेल उससे वह मांगने लगी। लिआ ने गुस्से से कहा, "तूने जो मेरे पती को ले लिया है तो क्या वह छोटी बात है? अब क्या तू मेरे पुत्र के दुदाफल भी लेना चाहती है?"(३०:१५)। राहेल ने कहा, "अच्छा तेरे पुत्र के दूदाफलों के बदले वह आज रात को तेरे साथ सोएगा"(३०:१५)।

९. एक और पुत्र चाहती थी - अन्ततः जब राहेल ने एक बच्चे को जन्म दिया तो क्या वह संन्तुष्ट थी? उसका नाम युसुफ रखा, जिसका अर्थ है "ऐसा हो कि और जोड़े" और कहा, "परमेश्वर मुझे एक पुत्र और भी देगा"(३०:२४)।

१०.अपने पिता का उतराधिकार छिना - अपने पिता के परीवार को छोड़ते समय राहेल ने और किस तरह से अपना स्वभाव बताया? "राहेल अपने पिता के गृहदेवताओं को चुरा ले गई" (३१:१९)। मूर्तियां उतराधिकार के हक की निशानी हुआ करती थीं।

११.पिता से झूठ बोला - जब याकूब और उसका परीवार पवित्र भूमि को लौट रहा था, तब उनका पीच्छा करते लाबान जब उनके पास पहूंचा, उसने उनकी तलाशी ली। मीठी बोलों वाली खूबसूरत राहेल शैतानी दिमाग़ वाली एक छोटी "शैतान" थी।

## क्या बाद में उनका जीवन खुशियों से भरा था?

१. राहेल को सुरक्षा दी - जब ख़तरों का सामना करना पड़ा, तब याकूब ने सारे परीवार से कहीं ज़्यादा सुरक्षा राहेल को दिया।(३३:२)

२. परमेश्वर ने उसकी एक आखीरी ईच्छा की पूर्ती की - राहेल ने असहनीय पीड़ा के सात एक और पुत्र को जन्म दिया। मृत्यु से पहले उसने उसका नाम "मेरे दुःख का पुत्र" रखा। याकूब ने दोबारा उसका नाम बिन्यामीन रखा। "मेरे दाहीने हाथ का पुत्र"।

३. "बेन" को "राहेल" की तरह सुरक्षा दी - क्या याकूब ने कभी राहेल पर काबू पाया? नहीं।

४. व्यंग्य - उनके गाड़े जाने के बारे में क्या कहा जा सकता है? याकूब को लिआ के बगल में दफनाया गया, लेकिन राहेल को सड़क के किनारे अकेली दफनाया गया।

## व्यवहारिक सीख

१. क्या आपकी असंन्तुष्टता आपके परीवार का विनाश कर रही है?

२. क्या असंन्तुष्टता एक कॅन्सर जैसा है जो आपको जीवन का आनंद लूटने से रोक रहा है?

३. क्या असंन्तुष्टता आपको दूसरों से रिश्ता बनाने से अलग रख रहा है?

४. क्या असंन्तुष्टता आपको अकेलेपन में धकेल रही है?

५. हमारी महान संन्तुष्टता हमें अपने परमेश्वर में मिलती है - "जो तुम्हारे पास है उसी पर संन्तोष करो; क्योंकि उसने कहा है, "स्वयं मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा" (इब्रानियों १३:५)।

पारीवारिक रिश्ते हमेशा ही सही नहीं होते। मेरी माँ कहती थी, "जीवन सही नहीं है"। यह सुनते सुनते मैं तंग आ गया।

प्रभु, जब मैं सोचूं कि जीवन सही नहीं है, मुझे याद दिलाओ कि मैं हमेशा ही दूसरों से सही बर्ताव नहीं करता हूं। कभी-कभी एक पोते पर मैं दूसरे से ज़्यादा ध्यान रखता हूं। मैं जानता हूं कि मैं इस बात का दोषी हूं कि मैं अपने परीवार के सिर्फ उन्हीं लोगों की बातों का जवाब देता हूं जो मेरी बातों से सहमत होते हैं या फिर जैसा मैं चाहता हूं वैसा ही करते हैं। मैं सिर्फ उनकी ही बात सुनता हूं जो मेरी बातें सुनते हैं।

जब मैं समझ नहीं पाता और न ही फल का अनुमान लगा पाता हूं, उस समय भी जिस तरह आप मेरी अगुवाई करते हैं इस बात के लिये आपकी सराहना करने में मेरी मदद कीजिए।

## चर्चा के प्रश्न

१. कभी कभार हमारे पापों को कबूल कर हमें उसे एक कागज़ पर लिख देना चहिये। वे सारी स्वार्थी और मतलबी बातें जो आपने कीये जिससे आपकी धार्मिक उन्नती को चोट पहूंची, या फिर आपके पती/पत्नी को नुकसान पहूंचा हो उन बातों को लिखो।

२. उस एक व्यक्ति के बारे में बताओ जिसने आप पर या आपके विवाह पर एक सकारात्मक प्रभाव डाला हो। ये उन्होंने कैसे किया? क्या वो स्वार्थी और मतलबी थे? उनके अच्छे गुण क्या थे?

३. आपके शादी-शुदा जीवन को और मज़बूत बनाने के लिये आपको अपने जीवन में कौनसे बदलाव लाने होंगे, यह बताओ।

४. आप अपने पती या पत्नी में कौनसे बदलाव देखना चाहते हैं, यह बताओ। उनके जीवन में बदलाव लाने के लिये आप किस प्रकार का प्रभाव डाल सकते हैं? गलतियों को याद दिलाने से उनको खुला होकर बदलने में मदद नहीं मिलेगी, बल्कि गलतियाँ गिनाने से मजबूरन वो आपका सुझाव लेना भी बन्द कर देंगे।

## केंन्द्रित प्रार्थना

- हमारा ध्येय है एक ऐसा परीवार बनाना जो हमेशा परमेश्वर की इच्छानुसार काम करे।
- विवाहित जीवन में एक दूसरे के साथ संतुष्टता का व्यवहार करने के द्वारा ही परीवार में आत्मिक संतुष्टता सीखाने की शुरुआत होती है।

- इस जीवन में एक दूसरे को पाकर आप कितने खुश हैं इस बात की चर्चा घर में हमेशा किया करो जिसे देखकर बच्चे भी आपस में स्पर्धा, जलन और कडुवाहट रखने के बजाए एक दूसरे की इज़्जत करने की प्रेरणा पाएंगे।

★★★★★★★★

# अध्याय - ६

# नाबाल और अबीगैल - भाग १

## परिचय:

नाबाल एक धनी पुरुष था, लेकिन मूर्ख, अशिष्ट और मतलबी सौदागर था। उसकी पत्नी अबीगैल बुद्धिमान, परमेश्वर का भय मानने वाली और सुन्दर थी। राजा दाऊद के भेजे लोगों का अपमान कर नाबाल मुसिबत में पड़ गया था। अबीगैल ने अपनी सारी बुद्धि और नम्रता के आचरण का उपयोग कर नाबाल को मौत के मुंह से बचाया (१शमुएल २५)।

## जीवन का लेखा:

### अबीगैल के गुण

- अबीगैल अपने पती की आधिनता में रहती, उसका पती मूर्ख था, इसके बावजूद , उसका ध्यान रखती, बुद्धिमान थी और परमेश्वर का भय मानती थी।

- वह न चिड़चिड़ाई - ना ही शिकायत की, लेकिन जो भी उसके सामने आया उसे कबूल किया।

- अपने बुद्धिमान निर्णय और नम्र स्वभाव के द्वारा उसने राजा दाऊद के आक्रमण से अपने पती और अपने परीवार की जान बचाई।

- अबीगैल ने कभी हार नहीं मानी - अपनी परीस्थिती के लिये अपने पती पर दोष नहीं लगाया, बुद्धिमानी से भरी बातें करती।

- उसने अपने पती से नम्रता से और सही समय पर बात की।

**प्रश्न:**

- यदि आपकी पत्नी या आपका पती धार्मिक नही हैं, तो आप इस परीस्थिती का सामना कैसे करते हैं - क्या आप दोष लगाते, शिकायत करते या सोचते हो फँस गया/फँस गई।

- अपने पती - पत्नी के लिये क्या आप परमेश्वर का आभार मानते हो? यदि आप शिकायत करते / दोष लगाते हो तो आप धार्मिक नहीं आप आभार नहीं मानते।

- परमेश्वर ने आपको जो पती - पत्नी दिया है क्या आप उनसे धार्मिकता का व्यवहार करते हो?

- क्या आप एक साथ मिलकर धार्मिक कार्य करते हो? आप क्या करते हो?

- अपने पती - पत्नी के किसी चरित्र से आपको चिड़ है?

## पवित्र-शास्त्रिय सिद्धान्त:

- १कुरुन्थियों ७:१२-१६

- गलातियों ६:१

## अध्याय - ७

# नोहा और उसका परीवार - भाग २

## परिचय:

नोहा एक धार्मिक व्यक्ति था - जो दुष्ट और भ्रष्ट लोगों के बीच रहता था। परमेश्वर ने एक नाव बनाने के लिये नोहा का उपयोग किया ताकि उसके परीवार और अन्य जानवरों को बचा सके। नोहा ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया और वैसा ही किया जैसा परमेश्वर ने कहा। परमेश्वर ने पानी से सारी पृथ्वी और उसमें की सब वस्तुओं का नाश कर डाला, लेकिन नोहा और उसका परीवार सुरक्षित रहा (उत्पत्ती ६-९)।

## जीवन का लेखा:

### नोहा के गुण:

- नोहा धार्मिक था - अपने समय के लोगों में निर्दोष था।
- वह परमेश्वर के साथ चला और उसका भय माना। हालांकि धरती भ्रष्टाचार और हिंसा से भरी थी - परमेश्वर की नज़रों में वह धर्मी ठहरा।
- उसने अपने परीवार को संसार के स्तर में गिरने नहीं दिया
- एक माता-पिता होने के नाते ,विशेष कर पिता होने के नाते यह एक बड़ी ज़िम्मेदारी है कि परमेश्वर के लिये अपने परीवार को परमेश्वर के भय में बढ़ाए।
- हालांकि यह मूर्खतापूर्ण बात लगती थी फिर भी नोहा के परीवार ने विश्वास किया और नाव में गए। अपने बेटों के दिलों में नोहा ने परमेश्वर का भय जगाया था।
- नोहा एक भ्रष्ट और दुष्ट समाज में रहता था इसलिये उसने ज़्यादा समय अपने परीवार को परमेश्वर और उसकी धार्मिकता के बारे में सीखाने में बिताया।

## प्रश्न:

- आप अपने परीवार में धार्मिकता का चलन कैसे चलते हो?

क्या आपके बच्चे आपको धार्मिकता में समझौता करते देखते हैं? क्या आपके बच्चे आपको धार्मिक और निर्दोष पाते हैं?

- बच्चों को परमेश्वर और उसके रास्तों के बारे में सीखाने के लिये आप सप्ताह में कितना समय अपने बच्चों के साथ बिताते हैं?

- अपने परीवार में धार्मिकता और आध्यात्मिकता लाने के लिये आप क्या प्रयत्न कर रहे हैं?

- अपने बच्चों को सीखाते समय क्या आप पवित्र शास्त्र के शिक्षणों पर विश्वास रखते हो?

## पवित्र-शास्त्रिय सिद्धान्त:

- व्यवस्थाविवरण ६:४-९;

- व्यवस्थाविवरण ६:१-२

- मत्ती ६:३१-३३

- १तीमुथियुस ३:४-५, १तीमुथियुस ४:१६

- नीतीवचन २२:६, २३:१३, २९:१५

- मरकुस १०:१४

## अध्याय - ८

# एली और उसके पुत्र - भाग ३

### परिचय:

एली परमेश्वर के मन्दिर का एक याजक था। उसके पुत्र होप्नी और पीनहास भी याजक के रुप में प्रभू की सेवा करते थे। एली के पुत्र भ्रष्टाचारी पुरुष थे और परमेश्वर का उन्हे कुछ ध्यान न था। इन जवान बेटों के पाप परमेश्वर की नज़र में बहूत बड़े थे क्योंकि, वे परमेश्वर की भेंट का तिरस्कार कर रहे थे। यहां तक कि मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करने वाली स्त्री के साथ व्यभीचार भी किया। एली उनपर काबू न रख पाया। दोनों बेटों को एक ही दिन मारकर परमेश्वर ने अनुशासन लाया।(१शमुएल २:१२-३६)।

### जीवन का लेखा:

- एली के पुत्र प्रभु के याजक थे फिर भी उन्होंने बुरे काम किये।
- वचन १३, २२: एली को इन बातों का पता था, फिर भी वह उनको रोक न सका।
- हमें यहां बेटों के प्रती अनुशासन की कमी और पाप के प्रती उपेक्षा (ध्यान न देना)दिखाई देती है, जिसका नतीजा यह निकला कि एली अपने बेटों को पाप करने से रोक न सका।
- सारे इस्त्राएल को इस दुष्टता का पता था, लेकिन एली इसके बारे में कुछ न कर सका।
- अनुशासन के शब्द बड़े कोमल थे।
- एक पिता होने के नाते, एली अपने बेटों को अनुशासित करने के अपने कर्तव्य में और उन्हें परमेश्वर के नियम सीखाने में असफल रहा।
- हालांकि एली एक याजकिय परीवार से था, वह भेंट की पवित्रता और परमेश्वर की सेवा करने वालों की रक्षा करने में असफल रहा।

### प्रश्न:

- अपने बच्चों को पवित्र शास्त्र के अनुसार शिक्षण देने के बारे में आपका क्या संकल्प है? लगातार यह शिक्षण देते रहने में आप कैसे हैं?

क्या आप अपने बच्चों के मित्रों को जानते हो?

- क्या बाहर के लोग बार-बार आपके बच्चे के गलत व्यवहार की शिकायत करते हैं? आप उनसे कैसे निपटते हो?

- क्या आप हर सप्ताह अपने बच्चों को पवित्र शास्त्र से उत्तम शिक्षण देने में उनके साथ समय बिताते हो?

- क्या आपकी पत्नी या दूसरे शीष्य ये समझते हैं कि अपने बच्चों को अनुशासन (शिक्षण) देने में आपका स्वभाव बहूत नर्म है?

## पवित्र शास्त्रिय सिद्धान्त:

- इफिसियों ६:४

- नीतीवचन २२:६

- नीतीवचन २३:१३, १४

## अध्याय - ९

# इसहाक और रिबका

### पढ़ने के वचन:

उत्पत्ति २४:१-३५
उत्पत्ति २४:१-२९;३५

### परिचय:

इसहाक एक शक्तिशाली पिता का पुत्र था और रिबका एक सही परीवार से थी। उनका विवाहित जीवन सही तरह से शुरू तो हुआ था लेकिन धिरे-धिरे अपनी दिशा से भटक गया और अन्त में एक दूसरे को ठेस पहूंचाने लगे।

### कोमल शुरूआत

१. विवाह के लिये पहला कदम क्या है? "तू मेरे पुत्र के लिये कनानियों की लड़कियों में से, जिनके बीच मैं रहता हूं, किसी को न ले आएगा। परन्तु तू मेरे देश में मेरे ही कुटुम्बियों के पास जाकर मेरे पुत्र इसहाक के लिये एक पत्नी ले आएगा।" (उत्पत्ति २४:३,४) - जुदाई - कनानी लोग व्यभिचारी, गन्दे, और विनाश की ओर बढ़ रहे थे।

२. जब हम अपने बच्चों के लिये जीवन साथी नहीं चुनते, तब हमें उन्हें यह सिखाना चाहिये कि विश्वासियों (शिष्यों) से ही विवाह करना अति आवश्यक है। (१कुरून्थियों ७:३०; २कुरुन्थियों ६:१४)

३. हमारे बच्चों को सही जीवनसाथी मिले यह निश्चित करने का सबसे बेहतर रास्ता कौनसा है? "वह कहने लगा, "हे मेरे स्वामी अब्राहम के प्रभु परमेश्वर, आज मेरे कार्य को सिद्ध कर, और मेरे स्वामी अब्राहम पर करूणा कर।"(उत्पत्ति २४:१२) - प्रार्थना

### रिबका के गुण क्या थे?

अ. खूबसूरत (वचन १६)
ब. कुंवारी (अनछुई) (वचन १६)
क. फूर्तिली (वचन १७)
ड. मिलनसार, बेबाक (बिनधास्त) (वचन १७)

इ. निस्वार्थ (वचन १८)
प. परीश्रमी (वचन १९)
फ. निर्णायक (वचन ५८)

## इसहाक के गुण क्या थे?

अ. परमेश्वर का भय माननेवाला (२६:२५)
ब. शान्त और न झगड़ने वाला (२४:२२)
क. उत्तराधिकार में धन और मान प्राप्त किया था (२४:३६)
ड. प्रार्थना में लवलीन और व्यस्त रहने वाला (२४:६३)
इ. ईश्वरीय उद्देश्य की समझ रखनेवाला (२६:२४-२९)

**इस विवाह का वर्णन करो?** विपरीत आकर्षक होता है।

## उन्होंने क्या सही किया?

अ. रीति-रीवाज़ों का आदर किया (२४:६५)
ब. परीवार का आदर किया (२४:६७)
क. एक दूसरे से प्रेम किया (२४:६७)
ड. वे हर समय एक दूसरे से कोमलता का बर्ताव करते (२६:८)

## उनकी मुख्य समस्याएं:

१. उनकी पहली समस्या क्या थी? वह बांझ थी (२५:२१) - बच्चों की कमी।
अ. बच्चे कभी किसी समस्या का हल नहीं होते।
ब. बच्चे कभी-कभी समस्या को बढ़ा देते हैं।
क. बच्चे मेल करा सकते हैं।

२. उनकी समस्याओं को किन बातों ने और बढ़ाया? रिबका का गुस्सैल व्यक्तित्व और उन बातों से दूर भागने की इसहाक की प्रकृती के कारण इन समस्याओं पर कोई बातचीत न हो पाना।

अ. इसहाक ने कभी इसके बारे में बात नहीं कीया।
ब. रिबका निराशा की हर सीमा पार कर गर्ल।

३. हिंसक गर्भ के नतीजे क्या हुए? "लड़के उसके गर्भ में आपस में लिपट के एक दूसरे को मारने लगे। तब रिबका ने कहा, "मेरी ऐसी ही दशा रहेगी तो मैं जीवित कैसे रहूंगी?"(२५:२२)

अ. उसकी प्रार्थना के उत्तर में, रिबका से यह कहा गया, "बड़ा बेटा छोटे के अधिन होगा" (२५:२३) - यह बात उसने कभी भी इसहाक को नहीं बताया।

ब. चुप रहने वाले पतियों के कारण पत्नियों क्रोध (प्रतिक्रिया)दिखाती हैं।
१. कुड़्कुड़ाहट (किर-किर)
२. बातों को छुपाना
३. शिकायत

४. पती-पत्नी आपस में बढ़िया बातचीत करने के लिये क्या कर सकते हैं?
अ. आप बात करो लेकिन ज़बरदस्ती न करो। सामने वाले को बात करने का मौका दो।
ब. जब पती बात करे तो उसका न्याय न करो।
क. यदि आप उनकी बातों से सहमत न हों तो, दया, आदर, ताना न मारने का स्वभाव रखें।
ड. अपनी बात समझाने के बजाए पती को समझने की कोशिश करो।
इ. तुरन्त निष्कर्ष पर न पहूंचो।
प. कुड़्कुड़ाहट न करो ( बातचीत को मारने का यही पहला कारण है)।

## अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिये बच्चों का उपयोग करना:

"इसहाक एसाव से प्रेम करता था, क्योंकि उसने एसाव के अहेर (हिरण) का मांस खाया था, लेकिन रिबका याकूब से प्रेम करती थी"(२५:२८)।

१. इसकी शुरूआत कहां हुई? "सारा....मेरा पुत्र,(याने इसहाक)" (२१:१०)। "अब्राहम....उसका बेटा,(याने इश्माएल)"(२१:११) - माता-पिता की समस्याएं बेटों के बीच फिर से उभरती हैं।

२. इसहाक को एसाव के कर्कश स्वभाव पर गर्व था, और खुद होकर पिछे हट गया। रिबका को याकूब का साथ भाता था, लेकिन अपने पती का साथ उसे कभी न भाया - दयनीय व्यवस्था।

३. माता-पिता पर क्या बीती? एक प्रबल माँ और एक निष्क्रीय पिता।

४. बच्चों पर क्या बीती? माता-पिता का एकतर्फा (पक्षपात)बर्ताव व्यक्तित्व की समस्याओं पर प्रभाव डालता है।

५. माता-पिता ने प्रत्येक बच्चे के साथ कैसा व्यवहार किया?
अ.उनके बच्चे अधिक लाड़ प्यार के कारण हर बात में जरूरत से ज़्यादा पाते थे।
ब.दूसरे बच्चे की बुराई की गई और उसका तिरस्कार हुआ।

६. दोनों बच्चों ने अपने माता-पिता से कैसे वीद्रोह किया?
अ.याकूब ने एसाव के पहिलौठे का अधिकार चुरा लिया।(२६:२९-३४)
ब. एसाव ने दो हित्ती स्त्रीयों से विवाह किया।
क. झगड़े से दूर रहने वाला इसहाक अहेर का गोश्त खाने में लगा रहा- पिच्छे हट गया।
ड. इसके बारे में बात करने का सही समय।
इ.यदि माता-पिता समस्या का सामना नहीं करेंगे तो यह समस्या बढ़ती जाती है।

७. समस्या लौट आई।
अ.इसहाक गुप्त रुप से एसाव को आशीर्वाद देने की योजना बनाता है।(२७:१-४)

ब. रिबका ने अब भी अपने पती को यह नहीं बताया कि याकूब परमेश्वर का चुना हुआ है।(रोमियों ९:१२)

क. घर कि बुनियाद बेईमानी और धोखे पर रखी गई थी।

ड. एक घर प्रेम और ईमानदारी के कारण फलता फूलता है।

८. भयानक नतीजे।
अ. कायर याकूब को इस बात का डर था कि पिता को इस बात का पता चल जाएगा, और फिर आशीर्वाद देने के बजाए उसे श्राप देंगे। रिबका ने कहा, "मैं श्राप ले लूंगी" - यहां त्याग का भास होता है परन्तु भावुक रुप में यह एक बिमारी है।

ब. इसहाक भय से थरथरा गया लेकिन अपने आपको ऐसा करने से न रोका - "विश्वास के कारण, इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद दिया" (इब्रानियों ११:२०)।

क. एसाव, याकूब से नफरत करता है और उसे जान से मारने के लिये जाता है। (२७:४१)
ड. रिबका अब भी बातों पर पर्दा डाले रहती है - "हित्ती लड़कियों के कारण मैं अपने प्राण से घिन करती हूं। यदि ऐसी हित्ती लड़कियों में से, जैसी इस देश की लड़कियां हैं,

याकूब भी एक को कहीं ब्याह ले, तो मेरे जीवन में क्या लाभ होगा?" (२७:४६)

इ. रिबका ने अपने पती को अपने दिल से निकाल दिया, अपने पहले बच्चे से नाता तोड़ लिया, और याकूब को अपने से दूर भेज दिया लेकिन वापस उसे कभी न देख पाई।

## पतियों और पत्नीयों के लिये साथ ले जाने के सबक:

अ. गलती किसकी है, इस बात से फर्क नहीं पड़ता - एक दूसरे से धिरे-धिरे दूर होना बन्द करो।

ब. मुड़ो और मुड़कर कहो, मुझे तुम्हारी ज़रूरत है।
क. अपने जीवनसाथी के साथ अपने विचारों और सपनों को बांटो।
ड. समस्याओं और संघर्षों के बारे में बात करो।

## केन्द्रित प्रार्थना:

प्रभु, जब मैं रिबका को देखती हूं, मुझे उन समयों के लिये बहूत दु:ख होता है जब मैंने मेरे स्वार्थीपन और किसी पर मेरी जलन को मेरे विचारों और निर्णयों पर काबू करने दिया। कृपया मुझे क्षमा करें। मेरे पती के प्यार के लिये धन्यवाद।

## चर्चा करने के प्रश्न:

१. उन समयों के बारे में लिखो जब आपने एक दूसरे से गहराई से बातचीत की थी। वह समय बढ़िया क्यों था?
२. वो कौनसी बाहरी बातें हैं जो आप दोनों के बातचीत के बीच दीवार बन जाती है?
३. इस सप्ताह अपने पती-पत्नी से अधिक जोशीले रुप से बात करने के लिये आप कुछ अलग क्या करेंगे?
४. आपकी वो कौनसी भावनाएं हैं जो एक बढ़िया बातचीत में मददगार ठहरेंगे? या कम बातचीत में?

## केन्द्रित प्रार्थना:

हमें यह समझने में मदद कर की हम ज़िम्मेदार हैं एक धार्मिक वंश बनाने के। हम जो बोएंगे वही काटेंगे। "इस भ्रष्ट पीढ़ी से अपने आप को बचाओ" - इसकी शुरुआत एक माता पिता होने के नाते हमारे जीवन के द्वारा हमारे घर से होती है। आमेन।

## अध्याय - १०

# अब्राहम और सारा

## परिचय:

अब्राहम और सारा को पवित्र शास्त्र में एक महान दम्पती के रुप में जाना जाता है। अब्राहम परमेश्वर का मित्र था और परमेश्वर से आमने - सामने बात करता था।

रोमियों ४:१७ - जैसे धर्मशास्त्र में लिखा है, "मैंने तुझे अनेक जातियों का पिता ठहराया है"। परमेश्वर की नज़र में अब्राहम हमारा पिता है, जिसमें परमेश्वर विश्वास करते हैं। अब्राहम विश्वास का पिता है और सारा को धार्मिक और पती के अधीन रहने वाली स्त्री के रुप में जाना जाता है।

१पतरस ३:६ - जैसे सारा अब्राहम की आज्ञा में रहती और उन्हें 'स्वामि' कहती थी। तुम भी यदि भलाई करो, और किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो तो उसकी पुत्रियां ठहरोगी।

## उनकी शक्तियां:

- जब अपना ऐश-ओ-आराम से भरा जीवन छोड़कर आने को कहा गया (उत्पत्ति १२:१-...), तब अब्राहम ने परमेश्वर पर भरोसा किया और विश्वास के साथ परमेश्वर की अगुवाई में चलता रहा।

- परमेश्वर के साथ महानता से चलने के कारण उसने पूरे मन से परमेश्वर पर भरोसा किया।

- सारा, परमेश्वर और अपने पती के अधीन थी, और उसकी अगुवाई में चलती थी। (१पतरस ३:५-६)

- लूत से अलग होते समय भी अब्राहम विश्वास के सहारे चला, लूत की तरह उसने दिखाई देने वाली चीज़ों पर नहीं, पर पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा रखा। (उत्पत्ति १३:१)

- दृढ़-संकल्प से भरी प्रार्थना से अब्राहम ने, सदोम और अमोरा को विनाश करने के परमेश्वर के विचार को बदल दिया। (उत्पत्ति १८:१६-३३)

- परमेश्वर की आज्ञा पालन करने में अब्राहम इतना तत्पर था कि, अपने एकलौते बेटे का बलिदान करने की बात से भी पीच्छे न हटा। (उत्पत्ति २२, इब्रानियों ११:१७-१९)

- परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर अब्राहम ने बिना किसी शक़ के विश्वास किया।

## उनकी कमज़ोरियां:

- सारा की योजनाओं से सहमत होकर अपना वंश बढ़ाने के लिये अब्राहम अपने दासी के साथ सोया।

- 'सारा भी माँ बनेगी', परमेश्वर की इस प्रतिज्ञा पर सारा ने शक किया; परमेश्वर की इस बात पर वह हंस पड़ी।

- उनको अपनी शारीरिक कमज़ोरियां परमेश्वर की शक्ति और भविष्य की योजनाओं से बडे लगे।

- जब परमेश्वर ने इस बात का कारण जानना चाहा तो, क्षमा मांगने के बजाए सारा परमेश्वर से झूठ बोली। वह परमेश्वर के सामने अच्छा दिखना चाहती थी और बुरा दिखने से घबरा गर्ल।

## व्यवहारिक उपयोग:

- अब्राहम और सारा अपने विश्वास और परमेश्वर के साथ चलने में एक मन थे। धार्मिक बने रहने में दोनों ने एक दूसरे की मदद की।

- वे मिलनसार और अतीथी सत्कार में बढ़िया थे, और उनके इन गुणों से परमेश्वर प्रसन्न थे। परमेश्वर ने उन्हें आशीष दिया और उनके बांझपन को दूर किया। (उत्पत्ति १८:१-१०)

- परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिये अपने सबसे किमती चीज़, अपने एकलौते बेटे का बलिदान करने के लिये भी वे तैयार थे।

- एक धार्मिक परीवार का वे सबसे उत्तम उदाहरण हैं, जो हरएक बात में परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं।

## चर्चा के प्रश्न:

१. एक परीवार के नाते आप कितना परमेश्वर के प्रति लवलीन हैं? इसके बारे में आप क्या कर रहे हैं?

इस सप्ताह अतीथी सत्कार के द्वारा एक परीवार को अपने जीवन में शामिल कर उन्हें

खुलकर अपने जीवन के बांझपन (कमज़ोरियों) के बारे में बताओ।

२. क्या आप त्याग के लिये जाने जाते हैं? परमेश्वर के स्तर के प्रति आपका परीवार त्यागपूर्ण रहता है, या फिर समझौता करता है?
**दशमांश** देने में आप कैसे हैं?

**आपको जो सबसे ज़्यादा पसन्द है, इस सप्ताह परमेश्वर के लिये उस बात का त्याग करो।**

★★★★★★★★